शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा वन विज्ञान केंद्र , बीकानेर (राजस्थान) के अतंर्गत कृषकों (Farmers), वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के सदस्य (VFPMC) एवं वन विभाग के क्षेत्र पदाधिकारियों (Field Functionaries) के लिए दिनाँक 12 से 14 फरवरी २०१९ तक "वानिकी में नवीन तकनीक" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा वन विज्ञान केंद्र , बीकानेर (राजस्थान) के अतंर्गत कृषकों (Farmers), वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के सदस्य (VFPMC) एवं वन विभाग के क्षेत्र पदाधिकारियों (Field Functionaries) के लिए वन विज्ञान केंद्र , पाली में दिनाँक 12 से 14 फरवरी 2019 तक "वानिकी में नवीन तकनीक" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जोधपुर , जालोर, सिरोही एवं पाली वन मंडलों से 6 वन पाल, 7 सहायक वनपाल, 14 वनरक्षक, 1 पशुरक्षक तथा 7 वन सुरक्षा समिति के अध्यक्ष एवं 10 सदस्यों सहित कुल 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस पर उद्घाटन समारोह में अपने उद्बोधन में संस्थान के निदेशक श्री एम. आर. बालोच, भा.व.से. ने कहा की ज्ञान जितना बाँटते हैं बढ़ता है , हमें नई-नई जानकारी को अपनाना चाहिए , नई तकनीक, नए विचार, नए तरीके अपनायें, इनका प्रचार-प्रसार करें । श्री बालोच ने खेती के साथ रोहिड़ा , शीशम, बेर, खजूर जैसे पेड़ लगाकर फसल के साथ उन्नत गुणवत्ता के पौधे, कृषि वानिकी को बढ़ावा देने का आव्हान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, श्री एम. एल. सोनल सेवा निवृत्त भा. व. से. अधिकारी ने कहा कि वैज्ञानिक जो अनुसंधान करते हैं उसे हम व्यवहारिक रूप से काम में लेवे । श्री सोनल ने बताया कि कम से कम खर्च में अधिक से अधिक उत्पादन कैसे लें , इस हेतु हमें तकनीक को समझ कर नयी तकनीक काम में लेनी चाहिये । इस अवसर पर सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. रंजना आर्या ने कहा कि , कोई जमीन बेकार नहीं होती उसमे प्रयास कर उत्पादन लाभ लिया जा सकता हैं। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने कहा कि आज के ज्वलंत मुद्दो में जलवायु परिवर्तन , जैव विविधता एवं मरुस्थलीकरण तीनों ही मुद्दो में वनों की अहम भूमिका हैं। उन्होने

वन क्षेत्र का जिक्र करते हुए बताया की तकनीक आप तक कैसे पहुचें। प्रशिक्षण में विभिन्न प्रकार के संभाषण से तकनीकी की जानकारी दी जाएगी। कृषि विज्ञान केंद्र , पाली के प्रभारी डॉ. धीरज सिंह ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र में किसानों कों व्यवहारिक ज्ञान देते हैं। उन्होने इस प्रशिक्षण का जिक्र करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र व आफरी संस्थान इस हेतु साथ में काम करेंगे। इससे पूर्व संस्थान के विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से. ने वन विज्ञान केंद्र एवं इसके अतंर्गत किए जा रहे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी । कार्यक्रम का संचालन डॉ. बिलास सिंह , सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने किया । इसके बाद तकनीकी सत्र में संस्थान की सेवानिवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक , आफरी डॉ. रंजना आर्या ने "लवणीय मृदा में वनीकरण तकनीक" विषय पर अपने संभाषण द्वारा लवणीय मृदा एवं इसमे वनीकरण तकनीक की जानकारी दी । भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री एम. एल. सोनल ने "वानिकी में नवीन तकनीक का उपयोग" विषय पर अपने संभाषण द्वारा वानिकी में नवीन तकनीक की महत्ता बतायी । डॉ. जी. सिंह , वैज्ञानिक "जी" आफरी ने "पौधरोपण में मृदा एवं जल संरक्षण" विषय पर संभाषण द्वारा जल एवं मृदा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। डॉ. बिलास सिंह, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने "उन्नत कृषि वानिकी प्रणाली एवं उसके लाभ" विषय पर व्याख्यान दिया ।

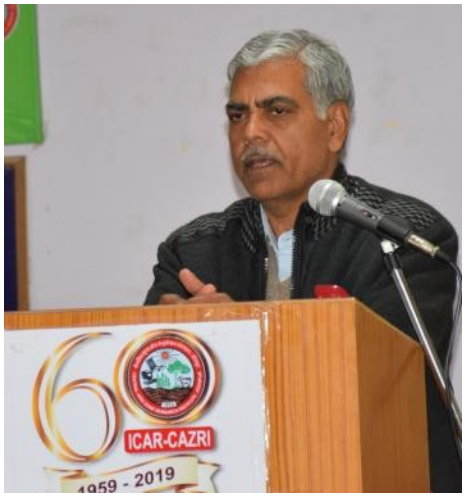

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रशिक्षणार्थियों को क्षेत्र भ्रमण (field visit) के द्वारा विभिन्न विषयों से संबन्धित व्यवहारिक ज्ञान कराया गया। भ्रमण के प्रारम्भ में कृषि विज्ञान केंद्र पाली के प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण किया जहां डॉ. चन्दन कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र पाली ने प्रशिक्षणार्थियों कों पॉलिथीन द्वारा मलचिंग , केक्टस एवं अजोला जैसे घास , बेर जैसे फल आदि विषयों की जानकारी करायी । इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों को खीमेल में कृषि वानिकी के संबंध में संस्थान के सेवानिवृत्त पूर्व निदेशक डॉ. टी. एस. राठौड़ ने कृषि के साथ साथ में विभिन्न प्रकार की वृक्ष प्रजातियों शीशम , केजुरीना, कुमट, हवन, मिलिया डूबिया , चन्दन, बाँस, औषधीय पादप जैसे जीवंती , फलदार वृक्ष जैसे अनार , पपीता, नींबू, बेर जैसी विभिन्न प्रजातियों सहित कृषि वानिकी का व्यवहारिक एवं विस्तृत ज्ञान , कृषि वानिकी में काम आने वाले

औज़ार, जैविक खेती , जैव उर्वरक की जानकारी दी तथा चन्दन के बीज की बुवाई को प्रायोगिक प्रदर्शन द्वारा बताया। प्रशिक्षणार्थियों को रानी में ही खिमवात ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे वृक्षारोपण की प्रक्रियाओं की जानकारी भी करवायी गयी।

भ्रमण कार्यक्रम में विस्तार विभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने भी विभिन्न जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी । भ्रमण कार्यक्रम में श्री महिपाल बिश्नोई, तकनीकी अधिकारी एवं श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी का सहयोग रहा।

प्रशिक्षण के तीसरे दिन कृषि विज्ञान केंद्र , पाली के प्रभारी एवं वैज्ञानिक डॉ. धीरज सिंह ने "राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में फलों की फसलों का संवर्धन एवं कृषि" विषय पर अपने संभाषण में शुष्क क्षेत्र की परिस्थितियों एवं यहाँ पनपने वाले फलों का बेर के उदाहरण के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। इसके बाद डॉ. यू.के. तोमर , वैज्ञानिक "एफ़" आफरी , जोधपुर ने "वृक्ष सुधार कार्यक्रम द्वारा उत्पादकता में वृद्धि" विषय पर अपने संभाषण द्वारा वृक्षों में सुधार करने की प्रक्रिया की जानकारी दी। श्री रमेश कुमार मालपानी , उप वन संरक्षक , आफरी , जोधपुर ने "पौधारोपण तकनीक" शीर्षक से संभाषण द्वारा पौधारोपण तकनीक की जानकारी दी। विस्तार विभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने सतत विकास उद्देश्य विषय पर संभाषण दिया। डॉ. टी. एस. राठौड़ , सेवानिवृत्त पूर्व निदेशक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आफ़री ने "उच्च गुणवत्ता युक्त पौध उत्पादन एवं नर्सरी प्रबंधन" विषय पर संभाषण दिया।

इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों से फीड बेक प्राप्त किया गया।

समापन समारोह में डॉ. धीरज सिंह , प्रभारी एवं वैज्ञानिक , कृषि विज्ञान केंद्र , पाली ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रशिक्षण कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस और निरंतर प्रयास करते रहे। मुख्य अतिथि डॉ. टी. एस. राठौड़ , सेवानिवृत्त पूर्व निदेशक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आफ़री ने बताया कि वानिकी में नूतन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण में जो विषय (contents) चयनित किये गये हैं जैसे लवण भूमि , मृदा एवं जल संरक्षण , कृषि वानिकी , वृक्षों का सुधार इत्यादि महत्त्वपूर्ण विषय हैं । इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में जो सीखा हैं उसे व्यवहारिक रूप से अभ्यास में लाकर व्यवहारिक रूप

से लागू (implement) कर प्रशिक्षण को सार्थक करना आवश्यक हैं। इससे पूर्व विस्तार विभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये । श्री महिपाल बिश्नोई, तकनीकी अधिकारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. बिलास सिंह, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने कार्यक्रम का संचालन किया । तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री महिपाल बिश्नोई, तकनीकी अधिकारी, श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी एवं श्री सवाई सिंह राजपुरोहित का भी सहयोग रहा।

भाकृअनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली
60
ICAR-CAZRI
1959 - 2019

भाकृअनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली
60
ICAR-CAZRI
1959 - 2019